25 / 01 / 76 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

डबल लाइट स्वरुप बनने का अनुभव

➢➢ मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा

➳ _ ➳ सर्वशक्तिवान की छत्रछाया के

➳ _ ➳ नीचे बैठकर

→ सर्वशक्तिवान की किरणों को

→ स्वयं में ग्रहण कर

◆ अपने अन्दर के

◆ सारे किचड़े को

• समाप्त कर रही हूँ

➳ _ ➳ चेकिंग कर रही हूँ

→ अन्दर का कोना-कोना

◆ कहीं कोई किचड़ा

◆ रह तो नहीं गया

• देह-अभिमान का किचड़ा

• विकार, विकर्मों का किचड़ा

• पुराने स्वभाव-संस्कार का किचड़ा

➳ _ ➳ सारे किचडे को खाली कर

→ बाबा के खजानों को

◆ स्वयं में भर रही हूँ

• ज्ञान का खजाना

• गुणों का खजाना

• शक्तियों का खजाना

➳ _ ➳ सुप्रीम लाइट से

→ लाइट को धारण कर

◆ लाइट बन

• चमक रही हूँ

➳ _ ➳ सुप्रीम लाइट को

→ अपने सारे बोझ देकर

◆ हल्का अनुभव कर रही हूँ

• डबल लाइट स्वरुप बन

• स्पीड से उड़ रही हूँ

➢➢ मैं निरंतर योगी आत्मा

➳ _ ➳ सदा एक बाबा के साथ रहकर

→ सदा बाबा को अपने समीप

◆ अनुभव कर रही हूँ

• हर संकल्प में बाबा

• हर कर्म में बाबा

• हर रूह रूहान में बाबा

• हर बात में एक बाबा

➳ _ ➳ मन-बुद्धि में सदा

→ एक बाबा को समाकर

◆ हर परिस्थिति को सहज

• पार कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं कम्बाइंड स्वरुप आत्मा

→ हजार भुजाओं वाले को छोडकर

◆ दो भुजाओं वाले देहधारी का

• सहारा नहीं लेती

➳ _ ➳ मैं शिव शक्ति

→ एक बाबा को साथ रख

◆ चैतन्य देवी बन

• सर्व का कल्याण

• कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं महादानी आत्मा

→ हर समय, हर कर्म करते

◆ शक्तियों, खजानों का

• दान कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं स्नेही आत्मा

→ सदा साथियों के साथ

◆ निस्वार्थ स्नेह का

◆ साथ निभाकर

• सदा पूजनीय बनने का

• यादगार बना रही हूँ

◆ हर समय देने वाली

• देवी बन रही हूँ